अध्याय द्वितीय
संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय–2

संबंधित अनुसंधान साहित्य का पुनरावलोकन

2.0. प्रस्तावना :–

मानव अपने अतीत के संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। इस कार्य में उसे अत्याधिक परिश्रम करना पड़ता है। अपने कार्य की वैज्ञानिकता, गहनता एवं स्पष्टता प्रदान करने के लिए शोधकर्ता का पुस्तकालय और उसके अनेक साधनों से परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

किसी भी समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान का प्राथमिक आधार होता है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। शोध निबंध की वास्तविक योजना उसके संचालन से पूर्व शोधकर्ता की अपानी समस्या से संबंधित साहित्य का सावधानीपूर्वक अध्ययन कर लेना आवश्यक होता है। समस्या के स्पष्ट विवेचन के लिए शोधकर्ता के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक होता है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के अभाव में कोई भी अनुसंधान उच्च स्तर का नहीं हो सकता।

जे. डब्ल्यू. बेस्ट के शब्दों में (1983)

"वास्तव में समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकता है। अन्य जीवधारियों में विभिन्न जो प्रत्येक प्रारंभ के साथ पुनः नये सिरे से कार्य प्रारंभ करते है, वह मनुष्य अतीत के संचित एवं आलेखित के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता हैं। "

जीवन के विभिन्न पहलुओं से प्राप्त ज्ञान हमें उससे आगे अध्ययन करने तथा ज्ञान प्राप्त करने का आधार प्रदान करता है। इस दृष्टि से संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है।

प्रत्येक अनुसंधान प्रक्रिया चाहे यह वैज्ञानिक क्षेत्र हो या मानविकी क्षेत्र से संबंधित साहित्यका अध्ययन महत्वपूर्ण कार्य के रूप में स्वीकार किया गया है जो समय साध्य होते हुए भी उपयोगी पक्ष है।

डब्ल्यू. आर. बोर्ग के शब्दो में (1963)

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिक्षा के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित रहता है यह शोध का प्रभाव पूर्ण बनाने एवं पुनरावृत्ति से बचाता है।"

वस्तुतः संबंधित साहित्य शोधकार्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक शोधकर्ता को यह भली प्रकार से ज्ञान होना चाहिए कि उनके अन्वेषण के क्षेत्र में कौन से स्त्रोंत आवश्यक है तथा उन्हें कहॉ और कैसे प्राप्त किया जा सकता है। क्योकि जिस समस्या पर कुछ समय पहले ही कार्य हो चुका हो उसी की नवीन सभावना की दृष्टि से अपव्यय मात्र है। साथ ही संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता की समस्या के बारे में नये आयामों का परिचय मिलता है। इस प्रकार प्रत्येक शोधकर्ता के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अतिआवश्यक है।

सुखिया एवं मलहोत्रा के अनुसार (1971)

"संदर्भ साहित्य का अध्ययन समय साध्य है परन्तु शोध कार्यक्रम का यह एक उपयोगी पक्ष है।"

संबंधित साहित्य का अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपने शोध की विविध विधियों उपकरणों आदि का चयन करने में सुविधा रहती है।

ढोढीयाल एवं फाटक ने कहा है (1972)

"समस्या से संबंधित संपूर्ण साहित्य का अध्ययन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है, तथा अनुसंधान को गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण योगदान है।"

2.1. संबंधित साहित्य का महत्व

इस संबंध में वोलटर, बोर्ग ने महत्व बताते हुए लिखा है कि "शैक्षिक अनुसंधान में संबंधित साहित्य का अध्ययन किसी शोधकर्ता के लिए किसी समस्या विशेष के मूल में पहुँचने का महत्वूपूर्ण साधन है।"

जे. डब्ल्यू.बेस्ट ने संबंधित साहित्य के महत्व को बताते हुए कहा है– "यद्यपि संबंधीत साहित्य की खोज व अध्ययन में काफी समय लग जाता है। लेकिन किसी भी शोधकार्य में उसका अपना महत्व है, क्योंकि इसका प्रभाव समस्या पर पड़ता है। संबंधित विषय सामग्री के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपानी सीमाएँ व क्षेत्र का ज्ञान हो सकता है।"

1. इस अध्ययन से समस्या से संबंधित विचारों, सिद्धान्तों एवं परिकल्पनाओं का स्पष्टीकरण होता है।
2. संबंधित साहित्य के अध्ययन से किसी नये शोध कार्य की पुनरावृत्ति की संभावना समाप्त हो जाती है।
3. शैक्षिक ज्ञान की वृद्धि में सहायक होता है।
4. इसके अध्ययन से समस्या के लिए अनुसंधान हेतु उचित विधि को अपनाने हेतु सुझाव मिलते है।

5. किसी समस्या के संदर्भ में जाना जा सकता है कि समस्या पर कहॉ तक शोध हो चुका है और कितना उसे आगे समस्या पर शोध करना है ताकि समस्या की पुनरावृत्ति ना हो सके।

6. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित समस्याओं का पता चलता है।

7. समस्या को गहराई से समझने में सहायता मिलती है।

2.2. संबंधित साहित्य के अध्ययन से लाभ –

- समस्या की अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होती।
- इससे पूर्व ज्ञान व अर्न्तदृष्टि का विकास होता है।
- अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का अन्वेषण होता है।
- संबंधित साहित्य के अध्ययन से ज्ञान का विस्तार होता है।
- अनुसंधान के नवीन दशाओं में प्रयोग किये जाने से उनसे प्राप्त समीकरण की प्रयोजन की सीमाओ का पता लगता है।
- समस्या से संबंधित पहले जितने कार्य हुए है उनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर शोधकर्ता अपने परिणामों से तुलना कर सकता है।
- संबंधित साहित्य के अध्ययन द्वारा पूर्व के अनुसंधानों की कमियों को सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप से सुधारा जा सकता हैं
- शोधकर्ता इससे अपने शोध का सीमांकन कर सकता है एवं अनुपयोगी एवं व्यर्थ के प्रकरणों से मुक्त हो जाता है।

2.3. संबंधित साहित्य अध्ययन के स्त्रोत–

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्त्रोत निम्न प्रकार के प्राप्त होते है।

प्रत्यक्ष स्त्रोतः–

अ. पत्र–पत्रिकाओं में उपलब्ध सामायिक साहित्य।

ब. निबंध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तक तथा बुलेटिन।

स. शोध प्रबंध।

द. अधिस्नातक तथा डॉक्टरनल पर अन्य शोध प्रबंध।

अप्रत्यक्ष स्त्रोतः–

अ. शिक्षा का विश्व ज्ञान काष।

ब. शिक्षा सूची पत्र।

स. शिक्षा सार।

द. संदर्भग्रंथ सूची एव निर्देशिका।

य. जीवन गाथा।

र. विविध अन्य स्त्रोंत।

2.4.0. शोधकार्य संबंधित अध्यन साहित्य का ब्योरा (Review of Related Literature) :-

2.4.1 चौहान महेश. एन.: (2007) : "प्राथमिक स्कूल में TLM की उपलब्धता और अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में हो रहे उपयोगः एक अध्ययन।" (एच.एन.जी.यु. पाटन, एम.एड.)

सारांशः–

☆ सामाजिक विज्ञान , संस्कृत और शारीरिक शिक्षण के विषयों में पुरुष शिक्षक स्त्री शिक्षक से ज्यादा TLM का उपयोग करते है।

☆ गुजराती, गणित, हिन्दी के विषयों में स्त्री शिक्षिका, पुरुष शिक्षकों से ज्यादा TLM का उपयोग करते है।

☆ प्राथमिक स्कूल में विज्ञान विषय में सबसे ज्यादा और शारीरिक शिक्षा मे सबसे कम TLM का उपयोग हो रहा है ।

☆ सरकार द्वारा दी जा रही TLM प्रशिक्षण कार्यक्रम में 28 प्रतिशत शिक्षक को प्रशिक्षण नहीं मिला।

2.4.2. पटेल रमीला बी. (2003) :- "महिला विकास में साक्षरता अभियान की भूमिका" (Ph.D. Guj. Vidhya.Amd.)

सारांशः–

☆ अनुसाक्षरता और निरंतर शिक्षण के बीच बहुत फर्क होने के कारण राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के लक्ष्य के मुताबिक परिणाम नहीं मिल रहा।

☆ साक्षरता से संबंधित हर एक प्रकार की कक्षा बिन आदिवासी विस्तार से आदिवासी विस्तार में ज्यादा दिखने को मिलती है।

☆ आदिवासी विस्तार में लड़की के शिक्षण में कम जागृति देखने को मिलती है।

☆ साक्षरता अभियान की तालीम से महिला रोजगार को प्रोत्साहन मिला है।

☆ 90 प्रतिशत प्रत्युत्तरदाता इस कार्यक्रम को जीवनलक्षी शिक्षण के कार्यक्रम मुताबिक स्विकारते है।

2.4.3 ज्योत्सना शर्मा : "सर्वशिक्षा अभियान के संदर्भ में ब्रिजकोर्स द्वारा शासन में नामंकित विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धी का अध्ययन शीर्षक पर शोध कार्य किया।" (आर.आई.इ 2007-08 भोपाल)

सारांश :

☆ ब्रिजकोर्स और नोन ब्रिजकोर्स के बीच मे सार्थक अंतर है।

☆ ब्रिजकोर्स और नोन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की मौखिक उपलब्धी परीक्षा में सार्थक अंतर है।

☆ ब्रिजकोर्स और नोन ब्रिजकोर्स के विद्यार्थियों की लिखित परीक्षा उपलब्धी में सार्थक अंतर है।

2.4.4. डॉ. व्यास चन्द्रकान्त, डॉ. पटेल बी.एस. ने "साबरकांठा जिले की प्राथमिक विद्यालयों में विद्यालय ओर शिक्षक अनुदान की गुणात्मक असर का मूल्यांत्मक अध्ययन शिर्षक पर किया। (डायट, इडर, गुजरात)

सारांश :

☆ शिक्षक अनुदान में से तैयार TLM खरीदनार 2.56% शिक्षक थे। 87% शिक्षको ने तैयार TLM खरीदने में अनुदान का आंशिक उपयोग किया था। और 10.44% शिक्षको ने तैयार उपकरण खरीदे ही नहीं थे।

☆ तैयार TLM में चार्ट, मॉडल, नमूना चित्र प्रयोग के सायन साहित्य और संदर्भ थे।

☆ अध्यापन सामग्री बनाने के लिए ज्यादा तर खर्च कागज, रंग, पेन, पेन्सिल और स्केचपेन मुख्य थी, उसमें 100% स्कूल थी।

2.4.5. मनोज कुमार : "सर्व शिक्षा अभियान में प्राथमिक स्तर पर नियमित एवं शिक्षा कर्मी शिक्षको की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन" शिर्षक पर किया था। (छत्तीसगढ़ 2005-06)

सारांश :

☆ नियमित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षाकर्मियों से अधिक है।

☆ ग्रामीण नियमित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता ग्रामीण शिक्षाकर्मी शिक्षको की शिक्षा प्रभावशीलता से अधिक है।

☆ ग्रामीण नियमित पुरूष शिक्षक और ग्रामीण नियमित महिला शिक्षक कम प्रभावशाली है जबकी शहरी पुरूष शिक्षाकर्मी और शहरी महिला शिक्षा कर्मी ज्यादा प्रभावशाली है।

2.4.6. खरे मेवालाल : "प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी- ग्रामीण छात्र/छात्राओं के उपस्थिति नामांकन शैक्षिक उपलब्धि एवं शालास्याग पर सर्व शिक्षा अभियान के कार्यक्रमों को प्रभाव का तुलनात्म्क अध्ययन। (2005-06)

सारांश :

☆ सर्व शिक्षा अभियान के पूर्व गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के नामांकन, छात्रों की संख्या एवं सर्व शिक्षा अभियान के पश्चात शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के गरीबी

रेखा के नीचे आने वाले छात्र–छात्राओं के नामांकन में सुधार हुआ है लेकिन अपेक्षित सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

☆ गरीबी रेखा के नीचे आने वाले शहरी क्षेत्र के छात्र/छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपस्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.4.7. ज्योति शर्मा : " सर्व शिक्षा अभियान के परिपेक्ष्य में छात्र–छात्राओं के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन" शिर्षक पर अध्ययन किया था। (2005 – 06 छत्तीसगढ़)

सारांश :

☆ ग्रामीण छात्र एवं शहरी छात्रों के आकांक्षा स्तरों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

☆ ग्रामीण छात्र एवं शहरी छात्राओं के आकांक्षा स्तरों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

☆ उच्च आकांक्षा स्तर के शहरी छात्र–छात्राओं की तुलना में ग्रामीण छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च विश्वसनीयता स्तर पर ($P<0.1$) सार्थक रूप से उच्च है।

☆ ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

➢ संबंधित अनुसंधान साहित्य का पुनरावलोकन का सारांश :–

प्रस्तुत शोध कार्य में संशोधनकर्ता ने संबंधित अनुसंधान साहित्य का पुनरावलोकन करके जाना कि विद्यालय और शिक्षक अनुदान की गुणात्मक असर, सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, शैक्षिक उपलब्धि एवं शालात्याग पर सर्वशिक्षा अभियान के कार्यक्रमों

का प्रभाव, शैक्षिक उपलब्धि और आकांक्षा स्तर, टी.एल.एम.की उपलब्धता का अध्ययन प्रक्रिया में उपयोग, महिला विकास में साक्षरता अभियान, ब्रिजकोर्स द्वारा शाला में नामांकित विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि आदि विषय पर शोध कार्य हुए है। संशोधनकर्ता ने न्यादर्श बदलने से शोध के परिणाम भी बदलते है। इस आधार पर सर्व शिक्षा अभियान योजना अंतर्गत दिया जा रहा शिक्षक अनुदान/टी.एल.एम.अनुदान की उपयोगिता एक अध्ययन शिर्षक पर शोध कार्य किया। जिसमें टी.एल.एम.का शैक्षिक प्रवृत्ति में संबंध, टी.एल.एम.का विषयवस्तु के साथ संबंध उपयोग मुद्दा पर शोधकार्य किया। अगले अध्याय मे शोध अभिकल्प के बारे में बताया गया है।